अप्रैल 2024

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

कोई मीठा-मीठा बोले वहाँ पर राग होता है और कड़वा बोले वहाँ द्वेष होता है।
सामने वाला मीठा बोलता है, वह खुद का पुण्य प्रकाशित है और सामने वाला कड़वा बोलता है,
वह खुद का पाप प्रकाशित है।

राजकोट : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 9 से 14 फरवरी 2024

भावनगर : त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव : ता. 16 से 19 फरवरी 2024

वर्ष : 19 अंक : 6
अखंड क्रमांक : 222
अप्रैल 2024
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2024
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

5 साल
भारत : 1000 रुपये

वार्षिक
भारत : 200 रुपये

भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

सुलझाएँ मान-अपमान की मानी हुई उलझन को

संपादकीय

अनादिकाल से जीव मनुष्य में आया तभी से मान-अपमान की झंझट चलती रहती है। मानरूपी कषाय अंधापन उत्पन्न करके संसार में भटकाता है। कषायों का मुख्य आधार है अहंकार! ऐसा अद्भुत ज्ञान होने के बावजूद भी अपमान आए तब खुद अहंकार में एकाकार हो जाता है और असर उत्पन्न होने पर राग-द्वेष में समय बर्बाद करके खुद का स्वसुख आवरित करता है। उसके लिए सन् 2023 में दादा भगवान की गुरुपूर्णिमा के निमित्त से पूज्यश्री ने दादाश्री का ज्ञानसंबंधी विशेष संदेश दिया था कि मान को ज्ञान से अलग देखकर हल लाओ। मान-अपमान के असर से मुक्त रह सके, उसके लिए समझ विकसित करने के लिए व्यवहार-निश्चय की अनगिनत चाबियों में से कुछ चाबियाँ परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से यहाँ संकलित हुई हैं।

परम पूज्य दादाश्री कहते हैं, कि शब्द तो सिर्फ खोखे जैसे हैं, वे कैसे लग सकते हैं? शायद पत्थर मारा हो तो लग जाता है लेकिन शब्दों का असर कैसे हो सकता है? सामने वाला व्यक्ति अपमान करे वह अपना ही भेजा गया व्यवहार खुला होता है। वहाँ व्यवहार को व्यवहार से भाग दो और व्यवहार को एक्सेप्ट करो। उसके बजाय व्यवहार में न्याय देखने जाते हैं तब फँस जाते हैं।

अपमान के समय बुद्धि पुराना *नोंध* रखती है, उसे *तंत* कहते हैं। सामने वाले का पुराना कर्म खत्म हुआ हो और आज वह नये कर्म में हो तब हम पुरानी बात की *नोंध* (तीव्र राग-द्वेष के साथ लंबे समय तक याद रखना) रखकर उल्टा सोचें, वह नेगेटिव अहंकार की निशानी है! उसमें खुद का भयंकर नुकसान होता है। जिसे छूटना है उसे हथियार नीचे रखकर, अपमान करने वाले के प्रतिक्रमण करके उपकार मानना चाहिए। जिससे अपना मन नहीं बिगड़े और सामने वाले पर हमें द्वेषभाव न हो।

यह ज्ञान प्राप्त करने के बाद कभी अपमान आए तो हार्ट लाल-लाल हो जाता है, उस समय ज्ञान में स्थिर रहकर हार्ट को देखते रहे कि कितना तप रहा है! इसे भगवान ने 'ज्ञानतप' कहा है। ऐसे कड़वे संयोगों में ही आज्ञा पालन का अवसर मिलते ही अंतरतप का पुरुषार्थ शुरु होता है। महावीर भगवान या पार्श्वनाथ भगवान, उन पर आते उपसर्ग के समय समता रखकर अंतरतप से संपूर्ण वीतराग होकर मोक्ष में गए।

ज्ञान के बाद महात्माओं का अमूल्य जीवन क्या मान-अपमान के लिए है? नहीं। जगत् के कोई भी संयोग हमें असर न कर सके, ऐसे टेस्टेड हो जाना है। आत्मा का *लक्ष* बैठने के बाद अनुभव की श्रेणियाँ निरंतर बढ़ें, यह अपने जीवन का *लक्ष* है। भीतर आत्मा की अनंत शक्तियाँ हैं इसलिए खुद को सिर्फ निश्चय ही करना है कि जैसा आनंद मान के समय रहता है, वैसा ही आनंद अपमान के समय भी रह सके, ऐसा है। अत: आज्ञा पालन करके, तप करके, खुद के स्वरूप में रहकर, राग-द्वेष से पर होकर वीतरागता की ओर कदम बढ़ाने का पुरुषार्थ हो सके, यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

सुलझाएँ मान-अपमान की मानी हुई उलझन को

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अनादिकाल से मान-अपमान का धमाल

प्रश्नकर्ता : ये क्रोध-मान-माया-लोभ की प्रकृति जन्म से ही जीव में होती है?

दादाश्री : अरे, यहाँ से साथ में लेकर ही जाता है और साथ ही वहाँ उपयोग करता है।

प्रश्नकर्ता : यहाँ आते ही यह सब कहाँ से सीख गया?

दादाश्री : यह तो सीखकर ही आया हुआ है। यह देखो न, यह बच्चा कितने साल का हुआ?

प्रश्नकर्ता : पाँच साल का।

दादाश्री : तो पचहत्तर पिछले जन्म के और पाँच इस जन्म के, तो बोलो अब अस्सी साल का हुआ न?

प्रश्नकर्ता : लोभ प्रकृति, मान प्रकृति से क्या भावकर्म बँधते हैं?

दादाश्री : इनसे ही ये सब भावकर्म उत्पन्न होते हैं। ये जो क्रोध-मान-माया-लोभ हैं, उन्हीं से अंधापन आता है और उससे फिर उल्टे-सीधे भाव करता है। वह अंधापन तोड़ने के लिए, क्रोध-मान-माया-लोभ जाएँ तभी अंधापन टूटेगा और तभी भाव शुद्ध होंगे। अहंकार से अंधा हो गया है, लोभ से अंधा हो गया है, क्रोध से अंधा हो गया है और कपट से अंधा हो गया है, चारों प्रकार से अंधा, अंधा और अंधा ही होकर घूमता है।

कषाय टिके हैं, अहंकार के आधार पर

अहंकार का ही दखल है। अहंकार की वजह से ही यह जगत् खड़ा रहा है। क्रोध-मान-माया-लोभ, अहंकार के अधीन हैं। अहंकार नहीं हो तो वे क्रोध-मान-माया-लोभ हैं, फिर भी नहीं हैं। क्योंकि उनका आधार अहंकार है और अहंकार भी आधारी चीज़ है। उसका रूट कॉज़ अज्ञानता है। लेकिन अज्ञानता तो समझो कि है ही, सारी दुनिया में फैली हुई। इसलिए क्रोध-मान-माया-लोभ का आधार क्या है? अहंकार! जगत् का आधार कौन? अहंकार! अहंकार निकाल लें तो क्रोध-मान-माया-लोभ कुछ करने वाले नहीं हैं, सभी मृत हो जाएँगे।

यानी यह ज्ञान मिलने के बाद अज्ञान गया। यानी अहंकार गया। इसलिए क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते, अगर होते हों उन्हें 'हम' देखते हैं। हमने देखा यानी हमें नहीं होते। क्योंकि देखने वाले को नहीं होते। जैसे बाहर होली जल रही हो तो आँखें जलती हैं क्या? यानी देखने वाला नहीं जलता। जबकि यह अहंकार, जिसे होता है न, वह तो क्रोध-मान-माया-लोभ सहित होता है, उसमें तो आँखें भी जलती हैं। क्योंकि वहाँ देखने वाला नहीं है, खुद अहंकार का कर्ता है।

अहंकार, चार्ज-डिस्चार्ज

प्रश्नकर्ता : इस अहंकार पर पूर्वजन्म का असर है क्या?

दादाश्री : पूर्वजन्म का ही असर है यह, इस जन्म का असर नही है। अहंकार कम-ज़्यादा

दिखता है वह सारा डिस्चार्ज स्वरूप है। वह नया उत्पन्न नहीं हुआ है। नया चार्ज तो भीतर हो रहा है। यह पुराना अहंकार जो दिखता है वह डिस्चार्ज हो रहा है। इसलिए आज खुद की इच्छा हो वैसा बदलाव नहीं कर पाता।

जहाँ अहंकार वहाँ लट्टू। आप शुद्धात्मा कहलाते हो, इसलिए आप लट्टू स्वरूप नहीं कहलाते। और ये चंदूभाई तो लट्टू है! लेकिन अभी तक जो भूलें की हैं उनके परिणाम बाकी रहे हैं। अत: यह जो परिणामी अहंकार है, वह कार्य करता रहता है। उससे आपको कोई नुकसान नहीं होगा। अज्ञान से अहंकार खड़ा है, वह अज्ञान जाए तो अहंकार चला जाता है।

'मान', वह अहंकार का पर्याय

अहंकार अर्थात् क्या? भगवान से दूर भागना। जैसे-जैसे अहंकार बढ़ता जाता है वैसे-वैसे *आड़ाई* (अहंकार का टेढ़ापन), मान, गर्व, घमंड आदि शब्दों का उपयोग होता है। भगवान से ज़रा सा दूर हुआ कि अहंकार जाग जाता है।

अहंकार को जहाँ पसंद हो, वहाँ राग करता है और नापसंद हो तो द्वेष करता है। उसे, पसंद-ना पसंद रहेगा। शुद्धात्मा और संयोग दो ही हैं लेकिन अहंकार का पच्चर 'उसे' चैन नहीं लेने देता।

अहंकार अर्थात् लोग जो समझते हैं, वह अहंकार नहीं कहलाता। लोग जिसे अहंकार कहते हैं न, वह तो मान है। अहंकार बिलीफ (मान्यता) में है, ज्ञान में नहीं है। जो ज्ञान में आए वह मान कहलाता है। जहाँ खुद नहीं करता है वहाँ पर ऐसा मानता है कि 'मैं कर रहा हूँ', उसे अहंकार कहते हैं। तो ज्ञान में 'मैं' पद आया कि उसे मान कहते हैं। कोई अहंकार पर चोट करे, अपमान करे तो तुरंत अहंकार भग्न हो जाता है या नहीं हो जाता? मान-अपमान दोनों का असर होता है न?

शब्दों के असर का पज़ल

प्रश्नकर्ता : कोई उल्टा-सीधा बोले तो असर हो जाता है।

दादाश्री : ये तो सिर्फ बोलते हैं, लेकिन अगर मारे तब भी डिप्रेशन नहीं आना चाहिए! दस दिनों तक भूखा रखे और भैंस की तरह बाँध दे, तब भी डिप्रेशन नहीं आना चाहिए। कोई उल्टा-सीधा बोले तो भी लग जाता है? पत्थर लगता है, पत्थर हमें छुआ इसलिए चोट लगी। लेकिन अरे, बोले तो भी चोट लगी? यह अलग प्रकार के लोग हैं! बोलने से चोट लगती होगी क्या?

प्रश्नकर्ता : कोई कुछ कहे तो भी असर होता है।

दादाश्री : अरेरे! शब्द का असर होता है, ऐसा व्यक्ति तो हमारे यहाँ होना ही नहीं चाहिए। शब्द का असर क्यों होता है? शायद पत्थर मारा हो तो समझ सकते हैं कि खून निकला और जलन भी हो रही है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु दादाजी, ये तो पत्थर से भी ज़्यादा भारी लगता है। उसे मान रखा है इसलिए।

दादाश्री : माना हुआ छोड़ देना चाहिए। खुद ने ही मान रखा है न! जिसने माना हो, वह इस गाँठ को खोल दे तो हो गया अलग। किसी के बारे में ऐसा जो माना हुआ हो उसे छुड़वा देना है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु उसके रूटकॉज़ (मुख्य कारण) पकड़ने पड़ेगें न, उसकी मान्यता तो नहीं छूटेगी न? ऐसे ही कैसे छूटेगा?

दादाश्री : नहीं, वह गाँठ खोल दी कि छूट गया।

प्रश्नकर्ता : एक ज्ञानी गाँठ को खोल सकते

हैं और दूसरी, समझ गाँठ को खोल सकती है। ये दोनों खोल सकते हैं।

दादाश्री : हमने आपकी गाँठ खोल दी न! फिर उसमें और क्या है? शब्द। शब्द का असर होना चाहिए क्या?

प्रश्नकर्ता : वास्तव में तो शब्द असर नहीं करना चाहिए। लेकिन आजकल शब्द का असर पत्थर से ज़्यादा है, इस पाँचवें *आरे* (दुषम काल में) में।

दादाश्री : लेकिन मेरा कहना है कि गालियाँ क्या हमें ऐसे स्पर्श करती हैं?

प्रश्नकर्ता : इसके बावजूद भी अंदर घाव लग जाते हैं।

दादाश्री : लेकिन वह आपको कैसे छू सकती है? वह बोला वहाँ पर और तुझे यहाँ पर कैसे चोट लग गई?

खुद सारे ब्रह्मांड का मालिक है और फँस गया है! कोई गाली दे, तुकार से बुलाए न, तो भी असर हो जाता है। अरे, वो कोई पत्थर नहीं है कि तुम्हें छू जाए, स्पर्श हो जाए! शब्द ही तुम्हें पहुँच जाते हैं, बिना तार के! लोग कुछ नहीं जानते की ये पझल (पहेली) क्या है!

रोंग बिलीफ का असर

आत्मा और शरीर का इतना अधिक सामीप्य है कि जुदापन का *भान* नहीं रहता। भ्रांति उत्पन्न हो जाती है। ये सब जो असर होता है - ठंड का, गर्मी का, भूख का, प्यास का, वह आत्मा पर नहीं होता। असर तो *पुद्गल* (अहंकार) पर होता है लेकिन आत्मा खुद मान बैठता है कि मुझ पर ही असर हो रहा है! आत्मा के गुणों की वजह से, जैसी कल्पना करता है वैसा ही हो जाता है। आत्मा 'मूल वस्तु' में बदलाव नहीं होता, अवस्था में बदलाव होता है। वास्तव में 'आत्मा' तो आत्मा ही रहता है लेकिन (*पुद्गल* को) असर होता है, 'रोंग बिलीफें' घुस जाती हैं!

इन 'रोंग बिलीफ' से इतना असर होता है, तो 'राइट बिलीफ' से कैसा असर होता होगा! जिस ज्ञान से संसार का असर नहीं होता, वह आत्मज्ञान है।

समझ पक्की होने पर ज्ञान परिणमित होता है

प्रश्नकर्ता : ज्ञान को स्थिर करने के लिए कौन से साधन अपनाने पड़ते हैं?

दादाश्री : साधन नहीं अपनाने हैं। ज्ञान को स्थिर करने के लिए सिर्फ समझने की ही ज़रूरत है। करने से स्थिर नहीं होगा। जहाँ करना पड़े, वहाँ सहजता चली जाएगी, स्थिर नहीं हो पाएगा। समझना पड़ेगा तभी स्थिर होगा।

प्रश्नकर्ता : जैसे-जैसे समय बीतता है, वैसे-वैसे यह ज्ञान दृढ़ होता जाएगा?

दादाश्री : जैसे-जैसे समझता जाएगा, वैसे-वैसे समाता जाएगा। हमें तो सिर्फ समझना ही है। मैंने जो ज्ञान दिया, उससे सारे आवरण टूट गए, कर्तापन छूट गया, सभी कारण खत्म हो गए। अब, उनके परिणाम बचे हैं। परिणाम किस तरह भुगतने चाहिए? उसके लिए यह समझ लो! समझने से सारा हल आ जाएगा और इतना अधिक समा जाएगा कि सिर्फ 'जानेगा' ही। कोई गाली देता रहेगा और यह 'जानता' रहेगा, बस इतना ही। नहीं रह सकता क्या ऐसा? जितना समझा उतना समा जाएगा।

जितना समा गया उतनी मुक्ति। यहीं पर मुक्ति का अनुभव हो जाएगा। समा जाना यानी मोक्ष में, खुद के 'स्वरूप' में समा जाना।

समझ किसे कहते हैं कि ठोकर न लगे

(चिंता, कषाय, मतभेद नहीं हों)। पूरा दिन ठोकर खाता रहता है और मैं समझता हूँ, जानता हूँ, करता है। तो भाई, समझ किसे कहता है? समझ और 'ज्ञान' में फर्क क्या है? जो समझ वर्तन में नहीं आए, तब तक उस ज्ञान को 'समझ' कहा जाता है। वह समझ धीरे-धीरे 'ऑटोमेटिकली' (अपने आप) ज्ञान के रूप में परिणामित होती है। वर्तन में आए तब जानना कि यह ज्ञान है, यानी कि तब तक समझते रहो।

जितनी जिसकी समझ पक्की, उतना उसका ज्ञान में 'डेवलपमेन्ट' होता जाएगा। वैसा कब होगा उसकी चिंता नहीं करनी है। वह तो अपने आप ही ज्ञान में परिणामित होगा। अज्ञान अपने आप ही छूट जाएगा। इसलिए यहाँ पर समझ-समझ करते रहना। ज्ञान ही काम कर रहा है, आपको कुछ भी नहीं करना है। नींद में भी ज्ञान काम कर रहा है, जागते हुए भी काम कर रहा है और स्वप्न में भी ज्ञान काम कर रहा है।

ज्ञान में रहकर हिसाब चुकाए

अनादिकाल से बहीखातों का संचालन चल रहा है। पिछले बहीखाते के ये हिसाब चल रहे होते हैं। देखो न, इस सास की और बहू की जान-पहचान भी नहीं होती और दोनों के मिलने के बाद फिर चलता है न! पहले तो जान-पहचान भी नहीं थी। सास ने बहू का मुँह भी नहीं देखा था, बहू ने सास का मुँह तक नहीं देखा था। फिर जब बहू पहले दिन आती है न, तब क्या कहती है? 'इतने गहने दों तभी मुँह दिखाऊँगी।' अत: गहने देने पर ही मुँह दिखाती है। फिर पहचान होती है कि यह तो अपना लेन-देन वाला सत्तानवे नंबर का बहीखाता है। फिर लेन-देन शुरु करती है। अत: पहले ही दिन गहने लेती है। और ये लोग खुशी से सब देते हैं। अब देखो न, बिना पहचाने सारा बहीखाता चल रहा है न!

यानी बात को संक्षेप में समझ लेना है कि, न लेना-न देना, फिर भी यह तो सब अपना हिसाब ही है। यह 'ज्ञान' जो दिया है न, इसमें रहना है और ये सब हिसाब हैं, इन्हें धीरे-धीरे चुकता करना है।

हम क्या कहना चाहते हैं, कि जो भी आता है, वह आपका हिसाब है। उसे चुकता हो जाने दो और फिर से अब रकम उधार मत देना।

प्रश्नकर्ता : आप, 'नई रकम उधार देना' किसे कह रहे हैं?

दादाश्री : कोई अगर आपसे कुछ उल्टा कहे तो आपके मन में ऐसा हो कि 'यह क्यों मुझ से उल्टा कह रहा है?' तो तब आप उसे नई रकम उधार दे रहे हो। आपका जो हिसाब था, उसे चुकाते समय आपने फिर से नए हिसाब का बहीखाता शुरू किया। यानी एक गाली जो दी हुई थी, वह जब लौटाने आया तब आपको उसे जमा कर लेना था, उसके बजाय आपने नई पाँच दे दीं। यह एक तो सहन नहीं होती है, वहाँ दूसरी पाँच दे दीं! यों नई देता रहता है और फिर उलझता रहता है। इस तरह सारी उलझनें खड़ी करता है। अब इसमें मनुष्यों की बुद्धि कैसे सुलझा पाएगी?

अगर तुझे यह व्यापार न पुसाए तो वापस मत देना, नया उधार मत देना और अगर पुसाता हो तो वापस पाँच देना।

व्यवहार में न्याय मत देखना

व्यवहार, व्यवहार स्वरूप है, वह आपको समझाता हूँ। आपके यहाँ विवाह हो और आपके सगे भाई के साथ आपने व्यवहार नहीं किया हो, मिठाई का उपहार नहीं भेजा हो और आपके भाई के वहाँ विवाह का अवसर आए तो क्या आप ऐसी आशा रखोगे कि उसके वहाँ से मिठाई आए?

नहीं रखोगे, क्योंकि उस भाई के साथ वैसा ही व्यवहार था और यदि एक भाई के वहाँ से विवाह के अवसर पर सोलह लड्डू आए हों और दूसरे भाई के वहाँ से तीन लड्डू आए हों तो आपके ध्यान में क्या होना चाहिए कि, 'भले ही आज मेरे ध्यान में नहीं है लेकिन मैंने तीन ही लड्डू भेजे होंगे। मेरा व्यवहार ही ऐसा रहा होगा, तीन लड्डू होंगे इसलिए सामने से तीन आए।' व्यवहार में न्याय नहीं देखना होता है, व्यवहार व्यवहार स्वरूप ही है।

यह पंखा फुल स्पीड पर घूम रहा था। उसका रेग्युलेटर बिगड़ गया, हमें पता नहीं था इसलिए कहा कि, 'पंखा ज़रा कम करो।' तब कहने लगे कि, 'पंखा कम नहीं होता है।' तब हम तुरंत ही समझ गए कि उसका व्यवहार ही ऐसा है। तो फिर उसका न्याय करने कहाँ बैठूँ? इसलिए व्यवहार में न्याय नहीं करना होता।

हर एक के साथ अपना व्यवहार होता है। उसे हमें समझ लेना है कि इसके साथ सीधा व्यवहार लाए हैं, इसके साथ ऐसा टेढ़ा व्यवहार लाए हैं। बेटी होकर भी सामने बोली, वही तेरा व्यवहार है, उसमें न्याय कहाँ देखेगा? और दूसरी बेटी हम थके हुए नहीं हों, फिर भी हमारे पैर दबाती रहती है, वह भी तेरा व्यवहार है। उसमें भी न्याय मत देखना।

ये न्याय देखने जाते हैं, उसी में फँस जाते हैं। व्यवहार तो खुलता जाता है और जैसा लाए होंगे, वैसा ही वापस मिलता है। जबकि न्याय तो क्या है कि सामने वाला ऐसा होना चाहिए, वैसा होना चाहिए ऐसा दिखाता है। न्याय किसके लिए है? जिसे 'मेरी भूल है' ऐसा समझ में आता है, उसके लिए उस भूल को मिटाने के लिए, वह न्याय है। जिसे ऐसा है कि 'मेरी भूल होती ही नहीं', उसे समझने के लिए व्यवहार है।

सामने वाला क्या बोला, कठोर बोला, उसके हम ज्ञाता-द्रष्टा। हमने क्या बोला, उसके भी 'हम' ज्ञाता-द्रष्टा। और उसमें यदि सामने वाले को शूल लगे ऐसा बोल दिया गया हो, वाणी कठोर निकली, वह उसके व्यवहार के अधीन निकली। लेकिन यदि आपको मोक्ष में ही जाना हो तो प्रतिक्रमण करके उसे धो डालो। कठोर वाणी निकली और सामने वाले को दु:ख हुआ, वह भी व्यवहार है। कठोर वाणी क्यों निकली? क्योंकि आज सामने वाले का और अपना व्यवहार ज़ाहिर (खुला) हुआ। भगवान भी इस व्यवहार को एक्सेप्ट (स्वीकार) करते हैं।

बॉस डाँटें तब...

अब वह जो बॉस है, वे चंदूभाई को डाँटते हैं, आपको कैसे डाँट सकते हैं? आपको वे पहचानते हैं क्या? चंदूभाई को डाँटते हैं। बॉस चंदूभाई को डाँटकर जाएँ, उसके बाद अपने ऑफिस में जाकर कहना कि 'आपने कुछ कहा होगा तभी कह रहे होंगे न! शांति रखो न ज़रा!' कह सकते हैं या नहीं? और बॉस तो डाँटते हैं या नहीं डाँटते, इस ज़माने में?

प्रश्नकर्ता : डाँटते हैं।

दादाश्री : वह अपनी पत्नी के साथ लड़कर आया होगा, इसलिए आप पर चिढ़ गया। क्या ऐसा नहीं हो सकता? आपकी भूल नहीं हो, फिर भी डाँटता है? आपको चंदूभाई को 'जानते' रहना है। ऑफिस का काम कैसा करते हैं, कैसा नहीं, वह आप 'जानो' और फिर उनसे कहना भी सही कि, 'ऐसा क्यों करते हो? पूरा काम करो न!' कहने में क्या हर्ज है? बोलने में क्या हर्ज है आपको? सिर्फ एडजस्टमेन्ट ही है, वर्ना और कर भी क्या सकते हो। अगर ऐसा भी बोलोगे तो अंदर हलचल नहीं मचेगी।

प्रश्नकर्ता : जब ज्ञाता-द्रष्टा रहते हैं उस समय, चंदूभाई ठीक से रहते हैं या नहीं, ऐसा डिफरेन्शिएट (अलग) करें या नहीं?

दादाश्री : चंदूभाई रहें या नहीं रहें, उससे हमें लेना-देना नहीं है। हम रह पाए या नहीं, वह देखना है। चंदूभाई रहें या न भी रहें, डिफॉल्टर (दोषित) भी हो सकते हैं, उससे हमें लेना-देना नहीं है अब।

नहीं चुभते बोल, बगैर दोष के

प्रश्नकर्ता : कोई हमें कुछ कह जाए, वह भी नैमितिक ही है न? अपना दोष नहीं हो, फिर भी बोले तो?

दादाश्री : इस जगत् में आपका दोष नहीं हो तो किसी व्यक्ति को ऐसा बोलने का अधिकार नहीं है। इसलिए ये बोलते हैं तो आपकी भूल है, उसका बदला देते हैं ये। हाँ, वह आपकी पिछले जन्म की जो भूल है, उस भूल का बदला यह व्यक्ति आपको दे रहा है। वह निमित्त है और भूल आपकी है। इसलिए ही वह बोल रहा है।

अब वह अपनी भूल है, इसलिए यह बोल रहा है। तो वह व्यक्ति आपको उस भूल में से मुक्त करवा रहा है। उसके प्रति भाव नहीं बिगाड़ना चाहिए। और आपको क्या कहना चाहिए कि प्रभु! उसको सद्बुद्धि दीजिए। उतना ही कहना, क्योंकि वह निमित्त है।

यह जगत् खुद का ही प्रतिस्पंदन है

हम में आड़ाई ज़रा भी नहीं होती। कोई हमें हमारी भूल बताए तो हम तुरंत ही एक्सेप्ट (स्वीकार) कर लेते हैं। कोई कहे कि यह आपकी भूल है, तो हम कहते हैं कि 'हाँ, भाई, यह तूने हमें भूल बताई तो तेरा उपकार।' हम तो जानें कि जो भूल उसने बता दी, उसके लिए उसका उपकार। बाकी दोष है या नहीं है, वह पता लगाने जाना नहीं है, उन्हें दिखता है, इसलिए दोष है ही। मेरे कोट के पीछे लिखा हो कि, 'दादा चोर हैं।' लोग फिर पीछे बोलेंगे या नहीं बोलेंगे? किसलिए 'दादा चोर हैं' ऐसा बोलते है? क्योंकि मेरे पीछे लिखा है, बोर्ड लगाया है न, वह उन्हें दिखता है। फिर जब हम देखें, तब पता चले कि हाँ, पीछे बोर्ड लगाया है। भले ही दूसरा कोई लिख गया होगा, पर इन सभी को पढ़ना तो आता है न!

भूल को स्वीकार कर ले, वही खरा व्यक्ति है न! आग्रह नहीं रखना है। आग्रह रखने के बजाय, दूसरों के दोष निकालने के बजाय, उस दोष को अपने सिर ले लो न!

निमंत्रण थप्पड़ को, मुआवज़े सहित

कोई हमें गालियाँ दे, हमें बुरा सुनने को मिला, वह तो बहुत पुण्यशाली कहलाता है। नहीं तो वह मिलता ही नहीं न! मैं पहले ऐसा कहता था, आज से दस-पंद्रह साल पहले, कि भाई, कोई भी मनुष्य पैसों की अड़चन वाला हो, तो मैं कहता हूँ कि मुझे एक थप्पड़ मारना, मैं पाँच सौ रुपये दूँगा। एक आदमी मिला था, मैंने उससे कहा कि 'तुझे पैसों की कमी है न? सौ-दो सौ की? तो तेरी कमी तो आज से ही पूरी हो जाएगी। मैं तुझे पाँच सौ रुपये दूँगा, तू मुझे एक थप्पड़ मार।' तब बोला, 'नहीं दादा, ऐसा नहीं हो सकता।' मतलब थप्पड़ मारने वाले भी कहाँ से लाएँ? मोल लाएँ तो भी ठिकाना पड़े, ऐसा नहीं है और गालियाँ देने वाले का भी ठिकाना पड़े ऐसा नहीं है। तब जिसे घर बैठे ऐसा फ्री ऑफ कॉस्ट (मुफ्त में) मिलता हो तो वह भाग्यशाली ही कहलाएगा न! क्योंकि मुझे तो पाँच सौ रुपये देकर भी कोई मिलता नहीं था।

जिसका अपमान, वह खुद नहीं है

अगर 'चंदूभाई' का कोई अपमान करे तो क्या होगा? रात को नींद नहीं आएगी न? झटके लगेंगे! यों तो क्षत्रिय प्रजा है न, इसलिए झटके लगते हैं। वह अपमान करने वाला तो सो जाता है, लेकिन यह झटके वाला नहीं सोता! कोई अपमान करे और हमें नींद नहीं आए, वह किस काम का? ऐसी निर्बलता किस काम की? कोई अपमान करे तो हम क्यों नहीं सोएँ? और अपमान किसी और का होता है, आपका होता ही नहीं। 'आपका' अपमान करे तो सहन करना ही नहीं चाहिए। लेकिन वह 'आपका' अपमान नहीं कर रहा है, तो किसलिए ऐसे हाय-हाय कर रहे हो? यह तो, अपमान किसी और का हो रहा है और 'आप' सिर पर ले लेते हो! 'मेरा किया' ऐसा तो नहीं होना चाहिए न! हाँ, 'आपका' अपमान नहीं करना चाहिए किसी को लेकिन 'आपका' अपमान कोई करता ही नहीं। 'आपको' पहचानेगा ही कैसे? 'आपको' तो कोई पहचानता ही नहीं है न! पहचानेंगे तो 'चंदूभाई' को पहचानेंगे। वह 'आपको' तो पहचानता ही नहीं न!

अपमान किसका होगा? 'अंबालाल मूलजी भाई का।' तुझे जितना अपमान करना हो उतना कर न! मुझे कहाँ उनके साथ लेना-देना है? वे मेरे पड़ोसी हैं। वे यदि रोएँगे तो मैं उन्हें चुप करवाऊँगा।

लेकिन 'मेरा अपमान हो गया' मानता है इसलिए बेचारे को नींद नहीं आती। वर्ना कितनी ग़ज़ब की शक्ति एक-एक 'इन्डियन' में है! सिर्फ उसे खोलने वाला नहीं है। फिर भी देखो न अभी, दीन हो गए हैं ये लोग! देखो तो सही, जहाँ-तहाँ 'क्यू' (लाइन) में खड़े रहते हैं बेचारे, इतने अधिक दीन हो गए हैं! वर्ना यह प्रजा तो कैसी थी! थोड़ा सा बात करने में, बुलाने में या 'इन्विटेशन' (आमंत्रण) देने में ज़रा अपमान जैसा लगे तो भोजन के लिए नहीं जाते थे, ऐसी यह प्रजा! ये लोग तो अपमान को बहुत बड़ी कीमती चीज़ मानते थे।

अब अपमान का भय चला जाए तो लोग व्यवहार में ढीठ हो जाएँगे। अपमान का भय है इसलिए ये शर्म में रहते हैं। वर्ना शर्म में रहेंगे क्या ये लोग? और अगर निश्चय में अपमान का भय चला जाए तो मनुष्य स्वतंत्र हो जाए। अपने यहाँ अपमान का भय चला जाता है, तो स्वतंत्र हो जाते हैं।

अतः इन लोगों को हम ऐसा ज्ञान देना चाहते हैं कि पूरे 'वर्ल्ड' (दुनिया) के सभी देशों में घूमे, लेकिन किसी से 'डिप्रेस' (निराश) न हो सके। 'डिप्रेस' नहीं हों, ऐसा होना चाहिए। और जो व्यक्ति किसी को 'डिप्रेशन' देता है, वह खुद 'डिप्रेस' हुए बगैर नहीं रहता। चाहे कितना भी बड़ा व्यक्ति हो, पूरा 'वर्ल्ड' हो, लेकिन वह हमें कैसे डिगा सकता है?

पंद्रह साल बाद भी न भूले, वह है तंत

सभी का अहंकार अलग-अलग है और अहंकार के 'थ्रू' (द्वारा) प्रकाश निकलता है, इसीलिए सभी की बुद्धि भी अलग-अलग होती है! जैसा जिसका 'इगोइज़म' (अहंकार), वैसी उसकी बुद्धि। किसी का 'इगोइज़म' कम हो तो उसकी बुद्धि बहुत 'लाइट' देती है और जिसका अहंकार विशेष होता है, उसकी बुद्धि उल्टे कार्य करती है।

जैसे-जैसे बुद्धि बढ़ती है, वैसे-वैसे स्मृति बढ़ती है, और वैसे-वैसे दुःख बढ़ता है! बुद्धि एक तरफ ही रख देनी है, उसकी बात ही नहीं माननी चाहिए। इन चॉल में एक व्यक्ति ऐसा होता है कि जिसकी बात मानने पर अपना फज़ीता

होता है, तो उसकी बात हम कितनी बार एक्सेप्ट (स्वीकार) करेंगे? एक-दो बार, लेकिन फिर तो उसकी बात एक्सेप्ट ही नहीं करेंगे। बुद्धि तो सेन्सिटिव (संवेदनशील) बना देती है, इमोशनल (भावुक) बना देती है, तो उसकी बात हमें क्यों एक्सेप्ट करनी चाहिए?

तंत एक ऐसी चीज़ है कि अगर किसी ने पंद्रह साल पहले आपका अपमान किया हो और वह पंद्रह साल तक आपको मिला न हो और वह व्यक्ति आज आपको मिल जाए न, तो मिलते ही आपको सब याद आ जाता है, वह है तंत। बाकी, तंत तो किसी का भी जाता नहीं है। बड़े-बड़े साधु महाराज भी तंत वाले होते हैं! रात को यदि आपने कुछ मज़ाक उड़ाया हो न, तो पंद्रह-पंद्रह दिनों तक आपसे बात नहीं करेंगे, वह है तंत!

रात को आपकी वाइफ के साथ झंझट हो जाए न, तो सुबह चाय रखते समय ऐसे पटककर रखती है। तब हम समझ जाते हैं कि, 'ओहोहो, रात को हुआ वह भूली नहीं है!' वह तंत है। फिर जो बोलती है, तो वह वाणी भी ऐसी *तंतीली* (चुभने वाली) निकलती है। पंद्रह साल बाद वह व्यक्ति (गुनहगार) मिला हो, तब तक आपको याद भी नहीं था। लेकिन पंद्रह साल बाद वह मिलता है तो आपको सबकुछ याद आ जाता है, सब तैयार हो जाता है, उसे तंत कहते हैं।

पंद्रह साल पहले हमने किसी व्यक्ति को देखा हो, उसे आज देखें, फिर भी वह हमें फिर से याद आ जाता है कि इसे देखा था, ऐसी यह मशीन है। प्रत्येक परमाणु में टेप करने की शक्ति है! आँखों को फिल्म खींचने की शक्ति है! अंदर अपार शक्तियाँ हैं! इस एक अंदर की मशीन पर से दूसरी सभी अपार मशीनें बनती हैं। यानी यह मशीन बहुत ज़बरदस्त पावरफुल (शक्तिशाली) है।

बदलते कर्मों की क्या नोंध?

कोई आपसे कुछ कह जाए तो वहाँ पर न्याय क्या कहता है? कि वह कर्म के उदय की वजह से आपको कह गया। अब वह उदय तो उसका पूरा हो गया और आपका भी उदय पूरा हो गया। अब आपको लेना-देना नहीं रहा। अब आप वापस उसे तंत सहित देखते हो, तब आप उसी कर्म का उदय ले आते हो! इससे उलझन खड़ी करते हो। अब वह व्यक्ति किसी और ही कर्म में होता है उस समय। समझने जैसी बात है न? लेकिन सूक्ष्म बात है।

इसका कोई स्पष्टीकरण ही नहीं हो सकता न, तंत रखा हुआ हो, उसका? और तंत रखने वाले लोग स्पष्टीकरण ढूँढेंगे, तो उसका कब अंत आएगा?

यानी कल आपका किसी ने अपमान किया हो और आज उस व्यक्ति को देखें तो वह नया ही लगना चाहिए और वह नया ही होता है लेकिन अगर ऐसा नहीं दिखता तो उसमें आपसे भूल हो रही है। आप दूसरे ही रूप में देख रहे हो। लेकिन वह नया ही होता है। एक कर्म पूरा हो गया इसलिए अब वह दूसरे ही कर्म में होता है। वह दूसरे कर्म में होता है या उसी कर्म में होता है?

प्रश्नकर्ता : दूसरे कर्म में होता है।

दादाश्री : और आप उसी कर्म में रहते हो। तो कितना बुरा कहा जाएगा! आपसे क्या कभी ऐसी भूल होती है? *नोंध* रखते हो क्या?

नोंध ही इस दुनिया में बेकार है। *नोंध* ही इस दुनिया में नुकसान करती है। कोई बहुत मान दे तो *नोंध* नहीं रखें और कोई गालियाँ दे, कि आप नालायक हो, अनफिट हो, वह सुनकर *नोंध* नहीं रखनी है। उसे *नोंध* रखनी हो तो रखे। हम इस पीड़ा को कहाँ लें वापस? बहीखाते लाकर फिर *नोंध* रखने लगें! *नोंध*बही वगैरह तो वह

रखे। जिसे खाताबही रखनी हो वह। हम तो *नोंध* नहीं रखते, उसे जो बोलना है वह बोले। क्योंकि उसका पिछला हिसाब होगा तभी वह बोल पाएगा, वर्ना नहीं बोल पाएगा।

हम *नोंध* नहीं रखते। हम उसके मुँह पर ज़रूर कह देते हैं, लेकिन फिर *नोंध* नहीं रखते। *नोंध* रखना तो भयंकर गुनाह है।

यानी किसी की दाद नहीं, फरियाद नहीं। कुछ भी नहीं। कोई अपमान कर जाए तो आपको मुझसे दाद-फरियाद नहीं करनी है। दाद-फरियाद बेकार गई। जो हुआ वही ठीक है, न्याय ही है न! प्रश्न ही खड़ा नहीं होता न! ऐसा है यह विज्ञान, साफ!

उदयकर्म में दखल नहीं, उसे ज्ञान कहते हैं

जब उदयकर्म में दखल देते हैं, उस क्षण बुद्धि होती है और जब उदयकर्म में दखल नहीं देते, उस क्षण ज्ञान रहता है। ज्ञान और बुद्धि का है वह भेद।

प्रश्नकर्ता : दखल सिर्फ बुद्धि से ही होती है न?

दादाश्री : दखल सिर्फ बुद्धि की ही है सारी। इस बुद्धि ने ही सारी झंझट और गड़बड़ की है। ज्ञान में ऐसा कुछ है ही नहीं। ज्ञान में तो दखल होती ही नहीं है न! हाँ, यदि चंदूभाई दखल करें और ज्ञान उसे जाने तो आप मुक्त।

प्रश्नकर्ता : कोई घटना घटे तब अज्ञानता खड़ी हो जाती है और उसका असर होता है और उस समय यदि इस ज्ञान की स्थिति में रहना हो तो किस तरह से आ सकते हैं?

दादाश्री : वह तो, चंदूभाई उसमें रहेंगे और आप इसमें रहो। अगर आप अंदर अलग रहोगे तो अन्य किसी भी चीज़ का असर नहीं होगा। वह कुछ सुधरेगा नहीं। अब जो जम चुका है, वह थोड़े ही सुधरेगा? उसे देखते रहोगे तो वह छूट जाएगा।

प्रश्नकर्ता : वह तो, जो चंदूभाई का है, वह डिस्चार्ज होता रहेगा।

दादाश्री : वह *पुद्गल* है, उसका धर्म अलग है, आत्मा का धर्म अलग है। दोनों का लेना-देना नहीं है। किसी के धर्म में दखल कैसे की जा सकती है? उसे सिर्फ 'देखना' है कि *पुद्गल* इस भाव में घूम रहा है। जिसे 'देखना' आ गया, उसका यह सब चला जाएगा। यदि उदयकर्म में हाथ नहीं डाला जाए तो काम हो जाएगा। यदि हाथ डाल दिया हो और बाद में पछतावा करके तुरंत उसे छोड़ दे तो वह ज्ञान के नज़दीक है, तब भी काम हो जाएगा उसका!

किसने लिया, किसने दिया, इन्होंने इन्हें दिया और इन्होंने लिया, भगवान ऐसी कोई बही नहीं रखते। कितने समझदार हैं! बही ही नहीं रखते। हिसाब पूरा साफ, बिना बही के हिसाब साफ! इसीलिए मैंने कहा है न कि भगवान बही नहीं लिखते और यह जो बुद्धि है, वह बही लिखती है। हस्तक्षेप करती है उदयकर्म में, दखल देती है उदयकर्म में। अरे, जो देता है, वह भी उदयकर्म है और वह लेता है तो वे उसके उदयकर्म, उसमें तुझे बीच में हस्तक्षेप करने का रहा ही कहाँ? उदयकर्म देता है न? और लेने वाला भी उदयकर्म है। वहाँ पर फिर जमा-उधार करने को रहा ही कहाँ? लेकिन यह बुद्धि की दखल है। वह यदि उदयकर्म में दखल न करे, तो उसी को ज्ञान कहते हैं। पूरा ज्ञान, हाँ! यहाँ पर आपके पास कुछ हद तक का ज्ञान तो है लेकिन केवलज्ञान उसे कहते हैं कि उदयकर्म में दखल न करे! आपके पास सम्यक् ज्ञान तो है ही। लेकिन अब केवलज्ञान होने से पहले ऐसी

सारी चीज़ें होनी चाहिए न? ज्ञान तो है ही, लेकिन केवलज्ञान में यह सब रुकावट डालेगा न?

फिर, उदयकर्म में दखल नहीं करना है। यदि कोई थप्पड़ लगाए तब आपको ऐसा नहीं कहना है कि, 'तू क्यों मार रहा है?' और क्यों मार रहा है, वह बोलने का अधिकार चंदूभाई को है लेकिन आपको वह अधिकार नहीं है। ये चंदूभाई भी उदयकर्म के अधीन बोलते हैं। आपको ज्ञाता-द्रष्टा रहना है। समझना तो पड़ेगा न? वीतराग मार्ग में गप्प नहीं चलेगी। अन्य मार्ग में चल सकती है गप्प। यह तो बहुत काता हुआ है, बहुत बारीकी से कातकर रेग्युलर स्टेज वाला (अमल में) ही दिया है और फिर केवलज्ञान से 'देखकर' बताते हैं। यों ही नहीं बोलते एक भी अक्षर। समझ में आए, ऐसी बात है न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन, ये उदयकर्म हैं, ऐसा भी यदि पूर्ण जागृति होगी तभी समझ में आएगा।

दादाश्री : हाँ, वर्ना उदयकर्म को भी नहीं समझ सकेगा। कितनी अधिक जागृति रहने पर समझ में आता है कि यह उदयकर्म है। थोड़ी-थोड़ी जागृति तो रहती है महात्माओं को। यह ज्ञान तो है ही न! ज्ञान तो हो चुका है, अब सिर्फ केवलज्ञान होना बाकी रहा।

प्रश्नकर्ता : केवलज्ञान होने में क्या बाकी रहा?

दादाश्री : अभी भी बुद्धि के कहाँ-कहाँ पर दखल हैं, वह 'देख' लेना। अत: यदि चंदूभाई बुद्धि से दखल करते हैं तो उसमें हर्ज नहीं है। आपको तो सिर्फ उस दखल में एकाकार नहीं होना है। यदि आप 'देखते' हो तो आप अपने हिसाब में हो और उसमें यदि हिसाब चूक जाते हो तो उसे उदयकर्म में दखल करना कहा जाएगा। चंदूभाई का उदयकर्म है लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए कि आप उसमें एकाकार हो जाओ। तब आप पर उसका असर नहीं होगा।

कभी न कभी तो निर्दोष देखना पड़ेगा न?

अपने कर्म न बँधे इस तरह से रहना चाहिए, इस दुनिया से दूर रहना चाहिए। ये कर्म बाँधे थे, इसीलिए तो ये मिले हैं। अपने घर में ये सब कौन इकट्ठे हुए हैं? जिनके साथ कर्म के हिसाब बँधे हुए हैं, वही सब इकट्ठे हुए हैं और फिर हमें बाँधकर मारते भी हैं! हमने निश्चित किया हो कि मुझे इससे बात नहीं करनी है, फिर भी सामने वाला मुँह में उँगलियाँ डालकर बुलवाता रहता है। अरे, उँगली डालकर क्यों बुलवा रहा है? उसे कहते हैं बैर! सारे पूर्वजन्म के बैर! कहीं पर देखा है ऐसा?

प्रश्नकर्ता : सब ओर वही दिखाई देता है न!

दादाश्री : इसीलिए मैं कहता हूँ न, कि वहाँ से हट जाओ और मेरे पास आ जाओ। यह जो मैंने पाया है वह आपको दे दूँ, आपका काम हो जाएगा और छुटकारा हो जाएगा। वर्ना, छुटकारा नहीं होगा।

हम किसी के दोष नहीं निकालते, लेकिन नोट करते हैं कि देखो, यह दुनिया क्या है? मैंने इस दुनिया को हर तरह से देखा है, बहुत तरह से देखा है। कोई दोषित दिखाई देता है तो वह अब भी अपनी भूल है। कभी न कभी निर्दोष तो देखना ही पड़ेगा न? अपने हिसाब के कारण ही है यह सब। इतना थोड़ा सा समझ जाओगे न, तो भी बहुत काम आएगा। इसलिए छूटना चाहो तो वह जो कुछ कड़वा-मीठा दें (अच्छा-बुरा कहें), उसे जमा कर लेना। हिसाब चुक जाएगा। किसी ने गाली दी तो क्या वह अव्यवहार है? व्यवहार है। 'ज्ञानी' को तो अगर कोई गालियाँ दे तो वे खुश होते हैं कि 'बंधन से मुक्त हुए।'

प्रश्नकर्ता : यानी जगत् निर्दोष है, यह समझने की दृष्टि अब विकसित करनी पड़ेगी न?

दादाश्री : यानी इस बावड़ी में यदि हम नहीं बोले होते तो यह दखल था ही नहीं। तब फिर हम सामने वाले का दोष निकालते हैं कि तू मुझे ऐसा क्यों बोलता है? प्रपंच हमने खड़ा किया और फिर बावड़ी को कहते हैं कि तू मुझे ऐसी गाली क्यों देती है? इस पर कोई कहेगा, ''अरे, उसने गाली दी, पर तू बावड़ी में ऐसा कह न, 'तू राजा है।'' तब बावड़ी भी ऐसा कहेगी, 'तू राजा है' बस।'' यह तो सब प्रोजेक्शन हमारा ही है।

बैर टालने के लिए, रहो पॉजिटिव

खुद का थोड़ा सा भी अपमान हो जाए तो मन में बैर रखता है और जाकर पुलिस वाले से कह आता है, 'उसने घर में तेल के डिब्बे जमा करके रखे हैं।' अरे, तेरा बैर है इसलिए ऐसा किया? उसे किसलिए पुलिस में पकड़वाया? बैर का बदला लेने के लिए! यह नेगेटिव अहंकार।

नेगेटिव अहंकार बहुत बुरा अहंकार कहलाता है। किसी को जेल में डलवाने फिरता है, तभी से खुद के लिए जेल खड़ी हो गई! अपने को कैसा होना चाहिए कि निमित्त तो, जो भी आए उसे जमा कर लेना चाहिए। क्योंकि अपनी पिछली भूलें हैं, इसीलिए हमें कोई गालियाँ दे तो हमें जमा कर लेनी चाहिए। जमा करने के बाद फिर से उसके साथ व्यापार मत करना।

हमारा सिद्धांत क्या है? पॉज़िटिव। नेगेटिव नहीं। कोई तलवार लेकर आए तब यदि अपने हाथ में तलवार हो तो नीचे रख देनी है। कड़वा तो, आपको चाहिए तो बोलना, नहीं चाहिए तो मत बोलना। कोई मारे, फिर भी उसे कड़वा मत बोलना। उसे कहना कि, 'तेरा उपकार मानता हूँ।'

भगवान ने तो कहा है कि इस काल में कोई गालियाँ दे गया हो, तो उसे आप खुद भोजन करने के लिए बुलाना। इतनी अधिक वाइल्डनेस (जंगलीपन) होगी कि उसे क्षमा ही देना। यदि कोई 'रिवेन्ज' (बदला) लेने गए न, तो फिर वापस संसार में खिंचेंगे। 'रिवेन्ज' नहीं लेना होता है इस काल में। इस दूषमकाल में निरी वाइल्डनेस होती है! क्या विचार नहीं आएँगे, वह कहा ही नहीं जा सकता! दुनिया से बाहर के विचार भी आते हैं! इस काल के जीव तो बहुत टकराएंगे। ऐसे लोगों के साथ हम बैर बाँधें तो हमें भी टकराना पड़ेगा। इसलिए हम कहें, 'सलाम साहब।' इस काल में तुरंत माफी दे देनी चाहिए, नहीं तो आपको खिंचना पड़ेगा। और यह जगत् तो बैर से ही खड़ा रहा है।

प्रश्नकर्ता : क्षमा माँगने में एक प्रकार का पावर उत्पन्न होता है, वह क्या है?

दादाश्री : इस दुनिया में यदि बल चाहिए तो प्रतिक्रमण और क्षमा माँगने से, दोनों से ही बल उत्पन्न होता है। आलोचना-प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान इतनी ही इस जगत् में बलवान करने वाली चीज़ें हैं। बाकी सभी निर्बल करने वाली है।

अपमान के सामने, करो प्रतिक्रमण

समकित यानी सीधी दृष्टि। उल्टी दृष्टि तो क्या करती है? 'इसने मेरा नुकसान किया, इसने मेरा फायदा करवाया, इसने मेरा अपमान किया, मुझे दु:ख दिया, इसने सुख दिया', ऐसा कहती है। बाहर तो दु:ख देने वाला या सुख देने वाला कोई है ही नहीं! सब अंदर ही हैं।

अपमान तो हुआ, इसलिए तुरंत समझना पड़ेगा कि यह मेरी भूल हुई है, तभी अपमान करता है न! अत: क्षमा माँगो। यों ही कुछ नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : सामने वाला व्यक्ति अपना अपमान करे तब भी हमें उसका प्रतिक्रमण करना चाहिए?

दादाश्री : अपमान करे तो ही प्रतिक्रमण करना है, आपको मान दे तब नहीं करना है। प्रतिक्रमण करोगे तो सामने वाले पर द्वेषभाव तो होगा ही नहीं। ऊपर से उस पर आपका अच्छा असर पड़ेगा। आपके साथ द्वेषभाव नहीं होगा, वह तो समझो कि पहला स्टेप है, लेकिन फिर उसे खबर भी पहुँचती है।

प्रश्नकर्ता : उसके आत्मा को पहुँचता है?

दादाश्री : हाँ, ज़रूर पहुँचता है। फिर वह आत्मा उसके *पुद्गल* को भी धकेलता है कि, 'भाई, फोन आया तेरा।' यह जो अपना प्रतिक्रमण है, वह अतिक्रमण के ऊपर है, क्रमण पर नहीं।

प्रश्नकर्ता : बहुत प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे?

दादाश्री : जितनी स्पीड (जल्दी) में आपको मकान बनाना हो उतने कारीगर बढ़ाना। ऐसा है न, कि इन बाहर के लोगों के साथ आपके प्रतिक्रमण नहीं होंगे तो चलेगा, लेकिन अपने आसपास के और नज़दीक के, घर के लोग हैं, उनके प्रतिक्रमण अधिक करने हैं।

नहीं चुनौती, तो पूर्णता की प्राप्ति

कोई मीठा-मीठा बोले, वहाँ पर राग होता है और कड़वा बोले वहाँ द्वेष होता है। सामने वाला मीठा बोलता है, वह खुद का पुण्य प्रकाशित है और सामने वाला कड़वा बोलता है, वह खुद का पाप प्रकाशित है। इसलिए मूल बात में, दोनों सामने वाले व्यक्ति को कुछ लेना-देना नहीं है। बोलने वाले को कुछ लेना-देना नहीं है। सामने वाला व्यक्ति तो निमित्त ही होता है। जो यश का निमित्त होता है, उससे यश मिलता रहता है और अपयश का निमित्त हो, उससे अपयश मिलता रहता है। वह निमित्त ही है खाली। उसमें किसी का दोष नहीं है!

इस जगत् में कोई भी व्यक्ति आपका कुछ भी नुकसान करता है, उसमें वह निमित्त है। नुकसान आपका है, इसलिए 'रिस्पोन्सिबल' (जिम्मेदार) आप हो। कोई व्यक्ति किसी का कुछ कर सकता ही नहीं है, ऐसा यह स्वतंत्र जगत् है। और यदि कोई कुछ भी कर सका होता तो 'फीयर' (डर) का अंत ही नहीं आता! तब तो फिर कोई किसी को मोक्ष में ही जाने नहीं देता। तब तो फिर भगवान महावीर को भी मोक्ष में जाने नहीं देते! भगवान महावीर तो कहते थे कि आपको जो अनुकूल हो, वैसा भाव मुझ पर करना। आपको मुझ पर विषय के भाव आएँ, तो विषय के करो, निर्विषयी के भाव आते हैं तो निर्विषयी के करो, धर्म के भाव आते हैं तो धर्म के करो, पूज्यपद के आते हैं तो पूज्यपद दो, गालियाँ देनी हों तो गालियाँ दो। मेरी उसके सामने कोई चुनौती नहीं है। जिनकी चुनौती नहीं हैं, वे मोक्ष में जाते हैं और चुनौती देने वाले का यहीं मुकाम रहता है!

नहीं तो यह जगत् तो ऐसा है न, कि आपके ऊपर उल्टा या सुल्टा भाव करता ही रहता है। जेब में आप रुपये रख रहे हों और वह किसी जेबकतरे ने देख लिया तो वह जेब काटने का भाव करता है या नहीं करता? कि रुपये हैं, काट लेने जैसा है! पर उतने में गाड़ी आई और आप बैठ गए और आप चले गए और वह रह गया, पर ऐसा भाव तो करता ही है जगत्! पर उसमें आपकी चुनौती नहीं है तो कोई आपका नाम देने वाला नहीं है। किसी के भी भाव में आपका भाव नहीं है तो कोई आपको बाँधने वाला नहीं है। ऐसे बाँधे तो अंत ही नहीं आएगा न? आप स्वतंत्र हो, कोई आपको बाँध सके, ऐसा नहीं है।

वाणी वह टेपरिकॉर्ड

प्रश्नकर्ता : आपका ही वाक्य है कि, ''जगत् का कोई भी शब्द हमें विचलित नहीं कर सके, ऐसे 'टेस्टेड' हो जाना चाहिए।''

दादाश्री : हाँ। कोई हमें ऐसे शब्द कहे कि, 'आप गधे हो, मूर्ख हो' वे हमें असर नहीं करते। 'आपमें अक्ल नहीं है' ऐसा मुझे कहे तो, मैं कहूँ कि, 'उस बात को तू जान गया, इतना अच्छा हुआ। मैं तो पहले से ही जानता हूँ। तूने तो आज जाना।' तब फिर से कहूँ कि, 'अब दूसरी बात कर।' तो निबेड़ा आएगा या नहीं आएगा?

प्रश्नकर्ता : तब ही निबेड़ा आएगा न!

दादाश्री : इस अक्ल को तौलने बैठें तो तराजू किसके वहाँ से लाएँ? बाट किसके वहाँ से लाएँ? वकील कहाँ से लाएँ? उसके बजाय हम कह दें कि, 'भाई, हाँ, अक्ल नहीं है, यह बात तो तूने आज जानी। हम तो पहले से ही जानते हैं। चल, आगे की बात कर अब।' तो निबेड़ा आए इसमें।

सामने वाले की बात पकड़कर बैठने जैसा नहीं है और शब्द तो सारे टेपरिकॉर्ड बोलता है। रिकॉर्ड बोल रहा हो, उसकी क्या चिंता? रिकॉर्ड बोल रहा हो उसकी *उपाधि* (परेशानी) होती है? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : तब *उपाधि* नहीं रहेगी, ठीक है।

दादाश्री : यह तिपाई लगे तो हम उसे गुनहगार नहीं मानते, लेकिन दूसरा कोई मारे तो उसे गुनहगार मानते हैं। कुत्ता हमें काटे नहीं और खाली भौंकता रहे तो हम उसे चला लेते हैं, वैसे ही यदि मनुष्य हाथ न उठाए और केवल भौंकता रहे तो निभा नहीं लेना चाहिए? वाणी से तो सारी झंझट है। वाणी के कारण ही तो ये सब भ्रांति जाती नहीं है। कहेगा कि 'यह मुझे गालियाँ देता है।' और इसलिए फिर बैर जाता ही नहीं न! वाणी के कारण ही यह जगत् खड़ा रहा है। यदि वाणी नहीं होती तो यह जगत् ऐसा नहीं होता। अर्थात् वाणी ही मुख्य आधार है।

वाणी, वह टेपरिकॉर्ड ही है। गधे की भी टेप है। गधा ढेंचूँ करता है, वह भी टेप है न! ये लोग बोलते हैं, वह सब टेपरिकॉर्ड है। जीवमात्र बोलता है, वह टेपरिकॉर्ड है। मैं जो बोल रहा हूँ, वह भी टेपरिकॉर्ड ही बोल रहा है। अब, टेपरिकॉर्ड बोलता रहे कि 'चंदुभाई खराब है, चंदुभाई खराब है', तो फिर आपको असर होगा? नहीं होगा। क्योंकि वह व्यक्ति नहीं है, जीव नहीं है, चेतन नहीं है। सारी वाणी मात्र निश्चेतन है। वाणी चेतन है ही नहीं। इसलिए उस पर क्रोध मत करना। वह पहाड़ पर से पत्थर गिरता है न, उसमें और इसमें कोई फर्क नहीं है।

यह विज्ञान इतना सुंदर है न कि किसी प्रकार से बाधक ही नहीं और झटपट हल ला दे ऐसा है। पर इस विज्ञान को *लक्ष* में रखे कि दादा ने कहा है कि वाणी मतलब बस रिकॉर्ड ही है, फिर कोई चाहे जैसा बोला हो या कोतवाल झिड़कता हो पर उसकी वाणी वह रिकॉर्ड ही है, वैसा फिट हो जाना चाहिए। तब फिर यह कोतवाल झिड़क रहा हो तो हमें असर नहीं करेगा।

गहन पहेली का हल विज्ञान से

प्रश्नकर्ता : इसमें क्या होता है कि यह टेपरिकॉर्ड थोड़ी बजे न, उस समय ऐसा लगता है कि यह टेपरिकॉर्ड है। फिर थोड़ी ज़्यादा देर बोले न, तो भीतर जोइन्ट (एकाकार) हो जाते हैं, जो जुदापन रहता था, वह नहीं रहता।

दादाश्री : फिर भी अब हमारे लिए यह सब निकाली बाबत है। पहले तो हम ऐसा जानते

थे कि ये सभी लोग बोलते हैं और उससे मुझे दु:ख होता है। लेकिन अब हमें पता चला कि यह तो रिकॉर्ड बोलता है। जब यथार्थ ज्ञान हुआ तब हमें पता चला कि यह तो रिकॉर्ड बोलता है, यह फाइल है, यह 'व्यवस्थित' है।

इतनी अधिक गहन पहेली है यह जगत् कि किसी से भी यह हल नहीं हुई। तीर्थंकर इसका हल लाकर चले गए और जिन्होंने तीर्थंकर के दर्शन किए, उन लोगों को आ गया। जिन लोगों ने भाव से भगवान के दर्शन किए और भगवान से कहा कि मुझ पर कृपा बरसाइए, उन लोगों को आ गया। बाकी किसी ने इसका हल नहीं लाया। बहुत गहन, गहन, गहन पहेली है यह!

इस पज़ल का सॉल्यूशन हमने थोड़े विभाग में दे दिया, उसे शोर्टकट करके। शोर्टकट में दे दिया है उससे झंझट ही खत्म हो गई न! अत: यदि आपको मोक्ष में जाना है तो भगवान की दृष्टि से चलना पड़ेगा। भगवान की दृष्टि कैसी है कि जगत् में कोई दोषित है ही नहीं। और संसार में भटकना हो तो लोकदृष्टि से चलना पड़ेगा। लोकदृष्टि कैसी है कि 'यह इसने किया, इसने मेरे साथ ऐसा किया'। उससे यहाँ पर भटकना पड़ेगा। और भगवान की दृष्टि कैसी है कि कोई जीव गुनहगार है ही नहीं। अत: कोई गालियाँ दे रहा हो तो, मैंने आपको ज्ञान दिया है कि वह रिकॉर्ड बोल रहा है, उसमें उसका क्या गुनाह है? और रिकॉर्ड कुछ भी बोले, उसका गलत हमें लगेगा नहीं। ऐसी भगवान की दृष्टि है, इससे मोक्ष होगा। यह तो, सभी अज्ञानता से ऐसा मानते हैं कि वह खुद ही बोलता है। इसलिए ऐसा लगता है कि यह मुझे बहुत परेशान कर रहा है। लेकिन वह कुछ नहीं बोलता। अत: हमारा ज्ञान इटसेल्फ (अपने आप) ही सभी प्रकार से छुड़वाता है और निरंतर समाधि में रखे, ऐसा यह ज्ञान है।

ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध रहना चाहिए। 'देह किस तरफ रहता है, देह के कैसे-कैसे नखरे है', वह ज्ञान में दिखना चाहिए। वाणी कठोर निकलती है या नरम निकलती है, वह भी आपको दिखना चाहिए कि अभी तो कठोर वाणी निकलती है। लेकिन वह भी रिकॉर्ड है, ऐसा दिखना चाहिए।

यह तो विज्ञान है। इसलिए विज्ञान को समझ लेना है। विज्ञान अर्थात् विज्ञान। विज्ञान में कुछ बदलाव नहीं होता। विज्ञान यानी विरोधाभास नहीं! सिर्फ समझ ही लेना है!

हँसते मुख से ज़हर पीओ...

आप शुद्धात्मा हो गए यानी नीलकंठी खानदान वाले हो गए। अब आप हँसते मुख से ज़हर पीओ। रो-रो कर तो सभी पी रहे हैं। बाहर के लोगों को पीये बिना चलता है? रो-रो कर पीते हैं। सामने वाले को गालियाँ देकर पीते हैं। हम लोग हँसकर पी लेते हैं। 'ला भाई, किस चीज़ का प्याला लाया है?' तो कहता है कि, 'पोइज़न' (ज़हर) है। 'ला, पी लेते हैं हम' और फिर वह 'व्यवस्थित' है। 'व्यवस्थित' नहीं होता न, तो मैं कहता कि, 'मत पीना भाई। उसे आदत पड़ जाएगी।' सामने वाले को ज़हर के प्याले पिलाने की आदत पड़ जाएगी। लेकिन नहीं, 'व्यवस्थित' है। अरे भाई, वह लाएगा कहाँ से? सात प्याले थे, तो सात के बाद आठवाँ लाएगा कहाँ से? भले ही आदत पड़ जाए फिर भी। वर्ना बाहर के लोग तो क्या कहते हैं कि, 'उसे गलत आदत पड़ जाएगी। इसके बजाय उसे मारो।' यानी आदत नहीं पड़ने देते। हमें क्या लेना-देना? 'व्यवस्थित' में सात प्याले होंगे तो सात देगा। यदि उसे आदत पड़ेगी तो उसे तकलीफ होगी। गाय के सींग गाय को भारी। एक गाय के सींग बहुत बड़े हो जाएँ तो, भार किसे लगेगा? उसी को न? जबकि खुद तो नीलकंठी खानदान वाला हो जाता है!

सम्यक् समझ बरताए समता

यदि मन में हो कि 'मेरा दोष नहीं है फिर भी मुझे ऐसा क्यों कहा?' इससे फिर रात को तीन घंटे जागता है और फिर थककर सो जाता है। स्त्री डाँटे और रात उसी घर में गुज़ारनी पड़े, वह तो सबसे बड़ा टेस्ट एक्ज़ामिनेशन (परीक्षा) है! यानी स्त्री के साथ रहते हुए भी मोक्ष होना चाहिए। स्त्री की गालियाँ खाए फिर भी समता रहे, ऐसा मोक्ष होना चाहिए।

कोई भी नापसंद संयोग मिल जाए तब यदि उस घड़ी तू उस संयोग को धक्का मारेगा तो तू फिर से उलझ जाएगा। इसलिए उस संयोग को धक्का मारने के बजाय उसे समताभाव से तू पूरा कर। और वह वियोगी स्वभाव का ही है। इसलिए अपने आप वियोग हो ही जाएगा, तुझे कोई झंझट ही नहीं। और फिर भी यदि उस नापसंद संयोग के सामने तू उल्टा रास्ता करने जाएगा तब भी काल तुझे छोड़ेगा नहीं, उतने काल तक तुझे मार खानी ही पड़ेगी। अत:, यह संयोग वियोगी स्वभाव वाला है, उस आधार पर धीरज रखकर तू चलने लग।'

गजसुकुमार को मिट्टी की पगड़ी बाँध दी थी न, उनके ससुरजी ने? और उसमें अंगारे रखे। उस घड़ी गजसुकुमार समझ गए थे कि यह संयोग मुझे मिला है और उसमें, ससुर ने मोक्ष की पगड़ी बंधवाई है, ऐसा संयोग मिला है। अब यह उन्होंने मान लिया, 'बिलीफ़' में ही माना कि यह मोक्ष की पगड़ी बंधवाई है और उसमें अंगारे रखे। अब नेमीनाथ भगवान ने गजसुकुमार से कहा था कि, ''तेरा' स्वरूप 'यह' है और यह संयोग 'तेरा' स्वरूप नहीं है। संयोगों का 'तू' ज्ञाता है। सभी संयोग ज्ञेय हैं।'' अत: वे 'खुद' उन संयोगों में भी ज्ञाता रहे और ज्ञाता रहे इसलिए मुक्त हो गए और मोक्ष भी हो गया।

समत्वयोग, भगवान पार्श्वनाथ का

समता तो उनकी दिखाई देती है, पार्श्वनाथ भगवान की। फणधारी नाग रक्षा करते हैं और कमठ परेशान करता है, बरसात बरसाता है। फणिधर नाग रक्षा करते हैं उन पर राग नहीं और कमठ अत्यंत दु:ख देता है, उन पर द्वेष नहीं, उसे समता कहते हैं। वही समता कही जाती है। बाकी, लोग समता को बहुत निम्न भाषा में ले गए हैं। लोगों द्वारा समता शब्द का उपयोग ही नहीं किया जा सकता। ज्ञान मिलने के बाद में समता और ज्ञान मिलने से पहले समता शब्द का उपयोग करना हो तो इस समता शब्द का उपयोग नहीं किया जा सकता। यह समता तो वीतरागों की समता है! वह तो शम और उपशम है। लेकिन यह समता तो वीतरागों की है। मालिकी वाली चीज़ है ही नहीं। वह समता शब्द, वह लोगों की सहनशीलता कही जाती है। इन साधु-आचार्यों में सब सहनशीलता कहलाती है। वीतरागों की समता तो बहुत बड़ी चीज़ है। यह जो पार्श्वनाथ की समता दिखाई देती है न, उसे कहते हैं समता। वे जो देव आकर रक्षण करते हैं, उनके प्रति किंचित्मात्र भी राग नहीं और कमठ कंकड़ फेंकते हैं, उन पर किंचित्मात्र भी द्वेष नहीं, ऐसे थे पार्श्वनाथ भगवान! एक क्षण के लिए भी वैसा ध्यान रहे तो काम हो जाएगा! फिर और क्या चाहिए?

एक व्यक्ति के साथ बैर बंधे तो सात जन्म बिगाड़ता है। वह तो ऐसा ही कहेगा कि, 'मुझे तो मोक्ष में नहीं जाना है, लेकिन तुझे भी मैं मोक्ष में नहीं जाने दूँगा!' पार्श्वनाथ भगवान का कमठ के साथ दस जन्म तक कैसा बैर था, वह बैर, जब भगवान वीतराग हुए, तब जाकर छूटा! कमठ द्वारा किए गए उपसर्ग तो भगवान ही सहन कर सकते थे! आज के मनुष्यों का सामर्थ्य ही नहीं

है। पार्श्वनाथ भगवान पर कमठ ने अग्नि बरसाई, बड़े-बड़े पत्थर डाले, मूसलाधार बारिश बरसाई, फिर भी भगवान ने सबकुछ समताभाव से सहन किया और ऊपर से आशीर्वाद दिए और बैर धो डाला।

समता से पूरे हुए दस जन्मों के बैर

हमारा दिया हुआ ही वापस दे रहे हैं, यह निश्चित है। पार्श्वनाथ भगवान को इतना तो पता चलता था न कि मेरा दिया हुआ ही वापस दे रहे हैं ये लोग। यदि अंदर बेचैनी बढ़ती है, तो टाइम भी बढ़ जाता है, मुद्दत खत्म होने में।

पार्श्वनाथ भगवान को बेचैनी बढ़ी नहीं थी इसलिए दस जन्मों में खत्म हो गया।

प्रश्नकर्ता : फिर भी दस जन्मों तक चला, वह क्या कम कहलाएगा?

दादाश्री : ये दस जन्म हैं, वे कितने जन्मों के आधार पर दस जन्म हैं, वह जानता है तू?

प्रश्नकर्ता : वह कुछ पता नहीं है।

दादाश्री : एक बाल के बराबर। दस जन्म एक बाल जितने भी नहीं थे।

प्रश्नकर्ता : ओहो! अनंत जन्मों के सामने तो कुछ भी नहीं है। इसलिए उन्होंने हर एक जन्म में वह समता बनाए रखी थी?

दादाश्री : तब जाकर खत्म हुआ। पहले दो-तीन जन्मों तक ज़रा कच्चे पड़ जाते थे, चिढ़ जाते थे, इसलिए बढ़ जाता था। यह जगत् ऐसा नहीं है कि एकदम समता रहे। यह तो, 'अक्रम विज्ञान' अलग तरह का है, इसलिए रह सकती है।

असरों से अलिप्त, भगवान 'खुद'

भगवान महावीर को कान में बरु (जंगली पौधे की नुकीली लकड़ी का टुकड़ा) ठोक दिया था न! कीलें नहीं ठोकी थीं किन्तु बरु ठोका था न, तो उससे व्यथा रहती थी। भगवान महावीर को भी रहती थी। सभी को रहती है, क्योंकि जब तक देह है न, तब तक देह का असर रहता है। उन्होंने वही तप किया था। अंत तक तप में तपकर ज्ञान से देखते ही रहे और 'खुद' असरमुक्त रहे! भगवान पर बहुत से लोगों को बैर भी था, किन्तु भगवान के वैसे परमाणु थे ही नहीं। इसी वजह से उन पर असर ही नहीं होता था न!

हमें तप करने ज़रूर हैं, परंतु घर बैठे आ पड़े हैं वे। बुलाने नहीं जाना पड़े! पुण्यशाली के लिए सभी चीज़ें घर बैठे आ जाती हैं। गाड़ी में कभी कोई सामने आकर झगड़ पड़े तो हमें समझना चाहिए कि यह आ पड़ा तप है! कि 'ओहोहो! मुझे ढूँढते-ढूँढते घर पर आया!' इसीलिए तप करना चाहिए उस समय। भगवान महावीर प्राप्त तप के अलावा और कोई तप नहीं करते थे। जो प्राप्त तप आ पड़ा हो, उस तप को हटाना नहीं है!

अंतर तप का पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : तप के समय कैसी समझ रहनी चाहिए?

दादाश्री : यह मेरे हित के लिए हो रहा है। दादा जो बताते हैं, वह सब मेरा है और जिसके लिए दादा मना करते हैं, वह मेरा नहीं है, इस तरह से अलग कर देना चाहिए अंदर।

प्रश्नकर्ता : इतना अधिक जलता रहता है और ऐसा लगता है कि यह सहन नहीं होगा। तब भी अंदर ऐसा रहता है कि यह हित के लिए है, काम का है, इसे बुझा नहीं देना है, फिर ऐसा रहा करता है।

दादाश्री : ज्ञान नहीं जलेगा, जो अज्ञान है वही भाग जलेगा। अत: तुझे (आत्मा) संभाल कर सो जाना है। जलने देना है, भले ही पूरा जल जाए। ज्ञान नहीं जलेगा, उसकी हम गारन्टी देते हैं।

अंतर तप तो भगवान बना देता है। जब अंतर तप हो तब जानना चाहिए कि ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप चार स्तंभ हैं, ऐसा पक्का हो जाना चाहिए। सिर्फ ज्ञान और दर्शन हो तब चारों स्तंभ पूर्ण नहीं हो सकते। अत: तू पुण्यशाली है कि तेरा अंतर तप चलता रहता है। वह उत्पन्न करने से नहीं हो सकता। हम कोशिश करके उत्पन्न करने जाएँ तो कुछ हो पाएगा क्या? अभी कोई यों हाथ पकड़े और कहे, 'कहाँ जा रहा है, चल।' तब वहाँ पर अंतर तप उत्पन्न हो जाएगा।

हमारा निरंतर तप रहता है। आपका तप स्थूल तप है, हमारा तो बहुत सूक्ष्म तप है। लेकिन जब यह स्थूल जल जाएगा उसके बाद वह स्थूल में से सूक्ष्म में आएगा, सूक्ष्म में से सूक्ष्मतर तप आएगा। उसके बाद में, वह मेरा जो तप है, उसके नज़दीक आपका तप आएगा।

अत: जैसे-जैसे यह सुनोगे वैसे-वैसे आपको समझ में आएगा। आपको तप कहाँ करना है? यह तो तप करना है वहाँ पर उत्तेजित हो जाते हो। दूसरों को तप करवा देते हो! सामने वाला फिर तप कर लेता है। समभाव से *निकाल* (निपटारा) कर ले न! हमारा तो रात-दिन तप ही है। आपने तो तप किए ही नहीं हैं, सो जाते हो गहरी नींद में, सुबह होने तक!

तप होने पर ही अनुभव होता है न! वर्ना अनुभव किस तरह से होगा? अंतर तपता है अर्थात्, जिस बाबत में आपका अंतर तपता है, उससे अलग रहने की कोशिश करते हो जबकि अंतर तपता है उस बाबत का आपको अनुभव होता ही है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि जिस-जिस बाबत में तप उत्पन्न होता है, वह बाबत छूट जाती है फिर?

दादाश्री : वह चीज़ छूट जाती है और वही उसका अनुभव है। वही आत्मा का अनुभव है, बस! सुख और प्रकाश बढ़ता जाता है, बस!

प्रश्नकर्ता : उसमें ऐसा क्या उत्पन्न होता है कि तप करना पड़ता है?

दादाश्री : मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार के विरुद्ध करने जाते हैं, उस समय वे ज़ोर लगाते हैं और उस समय हमें तप करना पड़ता है। जलता है उस क्षण। यह तो, जो पुरुष हुए हैं उनके लिए पुरुषार्थ है, यह तो ज़बरदस्त पुरुषार्थ है। देखना, पुरुष होने के बाद का पुरुषार्थ कौन सा रहा? तो वह है, ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप!

प्रश्नकर्ता : तप व्यवस्थित में नहीं आता?

दादाश्री : नहीं। तप कहीं 'व्यवस्थित' में होता होगा? ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप 'व्यवस्थित' में नहीं होते। वे पुरुषार्थ की चीज़ें हैं। 'व्यवस्थित' में तो प्रारब्ध है, डिस्चार्ज चीज़ें हैं!

तप से खिलती है 'व्यवस्थित' समझने की दृष्टि

हमने 'व्यवस्थित' शब्द दिया है। 'व्यवस्थित' तो पूर्ण मोक्ष में ही रखे, ऐसा है। लोग तो ऐसा कहते हैं न कि, आपने 'व्यवस्थित' दिया है, अगर सिर्फ 'व्यवस्थित' के ज्ञान में रहे तो भी मोक्ष हो जाए! कितना अच्छा 'व्यवस्थित' दिया है न! सिर्फ 'व्यवस्थित' को समझकर उसके पीछे पड़ जाए कि यह भी 'व्यवस्थित' है और वह भी 'व्यवस्थित' है। मुझे गालियाँ दीं, वह भी 'व्यवस्थित'; थप्पड़ लगाया, वह भी 'व्यवस्थित'। 'आओ, पधारो' कहे, वह भी 'व्यवस्थित'। किसी जगह पर हमें ऐसा भी कहना पड़ता है कि, 'हमारे फलाने भाई हैं और हमारे फलाने भाई ऐसे हैं और वे लाखों रुपये देते हैं', वह सब भी 'व्यवस्थित' है, आपको क्या लेना-देना? यह तो टेपरिकॉर्ड बोलता है और मैं भी ऐसा जानता हूँ

कि 'व्यवस्थित' है। मुझे कोई लेना-देना नहीं है। क्या बोला जाता है, वह देखता हूँ।

प्रश्नकर्ता : सही है।

दादाश्री : 'व्यवस्थित' पर थोड़ी-बहुत श्रद्धा बैठी है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बहुत बैठी है। 'व्यवस्थित' में सबकुछ आ गया, पूरा ज्ञान!

दादाश्री : कोई गालियाँ देता हो तो उसके वहाँ आपको सामने से जाना चाहिए, क्योंकि वह जो गालियाँ देता है वह 'व्यवस्थित' है और आप जाते हो, वह आपका हिसाब है।

बात को समझ जाए तो इस दुनिया में कोई दुःख है ही नहीं और अगर नहीं समझे और प्रयोग में हाथ डालें तो उसमें बेचारा प्रयोग क्या करेगा? प्रयोग तो कहेगा, 'मैं ऐसा हूँ, ऐसा तू जानता है और फिर हाथ डालता है, उसमें मैं क्या करूँ?'

प्रश्नकर्ता : हाथ डालेगा तो इफेक्ट होना ही है।

दादाश्री : हाँ। तेरा हाथ जल जाएगा, ऐसा तू जानता है फिर भी तू वापस हाथ डालता है। लेकिन ऐसे करते-करते ज्ञान फिट होता है। भगवान ने यह जो तप का आधार स्तंभ रखा है, उन्होंने यह गलत नहीं रखा है। भुगतना ही होगा। ऐसे तप आते ही हैं मनुष्य को।

प्रश्नकर्ता : उसके बिना कोई चारा ही नहीं है, तप किए बिना। वह उसका खुद का ही हिसाब है न, किसी और का नहीं है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन तप करना ही पड़ता है, तपना ही पड़ता है। अब, दादा दूर रहें तो तपना नहीं पड़ेगा। तब उतनी अपनी प्रगति भी नहीं होगी। जब तप आता है तभी प्रगति होती है।

लोग हम से कहते हैं न कि, आपके साथ रहना बहुत मुश्किल होता है। क्योंकि मैं तो दिन भर जाग्रत रहता हूँ न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, निरंतर, दिन भर संपूर्ण जागृति! 'व्यवस्थित' यदि दिमाग़ में बैठ गया तो कोई दुःख है ही नहीं।

दादाश्री : लेकिन वह भी देखने जैसा होता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, देखने जैसा। हमें 'व्यवस्थित' कितना सिखा जाता है! अनुभव करवा देता है। अच्छे-अच्छे अनुभव करवा देता है। समझ देता है सारी।

दादाश्री : 'व्यवस्थित' क्या कहना चाहता है कि दखलंदाज़ी मत करना। 'व्यवस्थित' ही है, ऐसा ही है। यही सही है। आप जो मानते हो वह गलत है, ऐसा कहना चाहता है।

प्रश्नकर्ता : सही बात है।

दादाश्री : उसमें भी लिखा है न कि, सिर्फ 'व्यवस्थित' समझ में आ गया होता तो हम तैर कर पार उतर जाते, दादा का 'व्यवस्थित' सही तरह से समझ में आ गया होता, तो। दृष्टि पूर्वक, लेकिन दृष्टि आएगी कहाँ से? तप किए बिना दृष्टि उत्पन्न नहीं हो सकती और दृष्टि हमेशा के लिए नहीं रहती।

अपमान के सामने ज्ञान - तप का पुरुषार्थ

यह ज्ञान प्राप्त करने के बाद, कोई व्यक्ति आपके पास आए और वह आपको कड़वा पिलाए, तो उस समय भीतर में हार्ट लाल हो जाता है, उस समय आप यदि ज्ञान में स्थिर रहकर हार्ट को देखते रहो कि कितना तप रहा है, तो इसी को भगवान ने 'ज्ञानतप' कहा है। संसारावस्था, वह कुदरती रचना है, उसमें अस्थिर क्या होना?

तप की बात ही आज निकली है न, तो इस तप को पकड़ लो एक बार। तप का पुरुषार्थ शुरू करो। महावीर भगवान ने इस तप के बारे में बताया था। मैंने उसके बारे में कहा, तब लोग समझते हैं कि बाहर के तप किए बिना मोक्ष में कैसे जा सकते हैं? तो वह तप नहीं है। वह तप तो संसार में भटकने का साधन है।

तप करने की भावना होती है क्या किसी को? उँगली ऊपर करो, शूरवीर दिखाई देते हैं? कुछ तो शूरवीरता रखो! बार-बार ऐसा अवसर नहीं मिलेगा। फिर से ये दर्शन नहीं मिलेंगे। ये दादा फिर से नहीं मिलेंगे!

प्रश्नकर्ता : 'ऐसे दादा अब फिर नहीं मिलेंगे', तो इससे हमें क्या समझना चाहिए?

दादाश्री : फिर से नहीं मिलेंगे अर्थात् ये जो मिले हैं, इनसे जितना सीखना हो उतना काम निकाल लो। फिर कोई ऐसा एक शब्द भी नहीं सिखाएगा, कौन ऐसा खाली बैठा होगा? कौन ऐसा खाली होगा? ऐसा तप करवाने वाला कौन होगा?

यों तो तप की बातें ज़्यादा नहीं करते हैं। मनुष्य का सामर्थ्य नहीं है। वर्ना फिर कभी-कभार ऐसी बातें बताते हैं। मनुष्य का सामर्थ्य कहाँ है इतना? यह तो, सब्ज़ी खराब बन गई हो तो दिन भर किच-किच करता रहता है। समभाव से *निकाल* अर्थात् क्या? तप करना। उसके सामने कितना बड़ा ऐश्वर्य प्रकट होता है! एक बड़ा साम्राज्य मिल जाता है! जितना इस तरफ जाने देते हो, उतना ही साम्राज्य मिलता है। और इसमें क्या जाने देना है? था ही नहीं आपका कुछ! अभी मर जाओगे टें होकर, तो वहाँ छोड़ आएँगे फटाफट, चार नारियल बाँधकर। कोई बाप भी नहीं पूछेगा। इसलिए काम निकाल लेना। इस शरीर में काम निकाल लेने जैसी जगह मिली है, तो यह काम निकाल लो न! आपको नहीं निकालना है? तो खड़े होकर बोलो, शूरवीरता से बोलो न, ऐसे क्या बोल रहे हो? काम निकालना है या नहीं निकालना है?

प्रश्नकर्ता : काम निकालना है, दादा।

दादाश्री : हाँ, तो काम निकाल लो अब। बेकार ही टें होकर मर जाओगे। कोई बाप भी देखने नहीं आएगा। अरे, देखने आएँगे तो शरीर को देखेंगे। क्या आत्मा को देखेंगे? बेकार ही हाय-हाय-हाय! अनंत जन्मों से भिखारीपन ही किया था न, हमने अपनी दुनिया में। जिसे ज्ञान नहीं है उसे ऐसा नहीं कहा जा सकता, एक अक्षर भी नहीं कहा जा सकता। वही उनका सर्वस्व है। यह तो, जिसे ज्ञान है उसी को कहा जा सकता है और वही तप कर सकता है, और कोई नहीं कर सकता न!

मैं पहले से तप वाला व्यक्ति था

और मैंने यह जो ज्ञान दिया है न, कि वह नहीं बोलता, यह तो 'व्यवस्थित' बोलता है। यह वाणी जो मैं बोलता हूँ, उसके लिए मैं लाभ नहीं लेना चाहता कि, मैंने कितना अच्छा बोला! क्योंकि 'व्यवस्थित' बोलता है, इसमें मुझे क्या लाभ लेना है? सामने वाला गालियाँ देता है तो भी 'व्यवस्थित' है, सामने वाला मुझे मान दे कि दादा, आपके जैसा दुनिया में कोई नहीं हुआ है। उससे भी मुझे क्या लेना-देना? मैं तो मैं ही हूँ, मुझे इनके शब्दों से कोई लेना-देना नहीं है, वर्तन से लेना-देना नहीं है, मैं तो सिर्फ केवलज्ञान स्वरूप हूँ। और कुछ भी हूँ ही नहीं, यहाँ पर! मुझे इस दुनिया का क्या असर हो सकता है?

जो वीतराग होकर बैठे हैं उन्हें क्या छू सकता है? और अंत में वीतराग होना है। लेकिन

प्रयोग में हाथ डालेंगे तो हम जल जाएँगे। तो क्या इस पर से पता नहीं चलता कि यह मेरी भूल है!

प्रश्नकर्ता : समझ में आता है, तुरंत समझ में आ जाता है।

दादाश्री : तुरंत समझ में आता है कि यह मेरी भूल है। अब, 'कभी भी वह भूल क्यों होती है?' तो कहते हैं, 'भूल नहीं होगी तो अनुभव ज्ञान नहीं होगा। वह जो भूल होती है, वह बड़ा तप है, वर्ना तप ही उत्पन्न नहीं होगा न! तप के आधार स्तंभ की ज़रूरत है ही।' हमें ऐसे बहुत तप आए हैं, ज़बरदस्त तप आए हैं। आपने तो क्या देखा है? आपने तो तप देखा ही नहीं है! क्योंकि हमारे ऊपर तो कोई था ही नहीं न! इसलिए खुद अपने आप ही करने पड़े थे न! रात भर जागना पड़े ऐसे तप करने पड़े थे। किसी ने कोई एक शब्द कह दिया हो न तो रात भर जागना पड़े, ऐसे तप! आपके तप तो दो-पाँच मिनट रहकर और फिर वापस बंद हो जाते हैं। क्योंकि आपके पास तो ज्ञान है। क्योंकि शुरू में, हमें तो ज्ञान के बिना ही चलना था न।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान होने से पहले।

दादाश्री : हाँ। आपका तो रौब है, ज्ञान साथ है न! देखो न, कैसे रौब से सो जाते हैं! झट से ओढ़कर सो जाते हैं। दादा बिना ओढ़े सो जाए तो भी हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं, दादा। ऐसा नहीं चलता।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। लेकिन मेरा कहना यह है कि मुझे ज़रूरत नहीं है। मैं तप वाला व्यक्ति हूँ शुरू से ही। आप अभी तप में आए नहीं हो, देखा नहीं है तप।

जगत् जीता जा सकता है हारकर

इस 'ज्ञान' के बाद आपको निरंतर शुद्धात्मा का ध्यान रहता है। इसलिए रोज़ शाम को आपको पूछना चाहिए कि, 'चंदूभाई हो या शुद्धात्मा?' तो कहेगा कि, 'शुद्धात्मा!' तो पूरा दिन शुद्धात्मा का ध्यान रहा कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हम ऐसा कहेंगे तो लोग हमें पागल कहेंगे।

दादाश्री : 'पागल' कहेंगे तो 'चंदूभाई' को 'पागल' कहेंगे। आपको तो कोई कहेगा ही नहीं। आपको तो पहचानते ही नहीं है न! 'चंदूभाई' को कहते हैं। तो 'आप' कहना कि, 'चंदूभाई, आप होंगे तभी कह रहे होंगे और अगर आप नहीं हो फिर भी अगर कहेंगे तो उनकी जोखिमदारी। वह फिर आपकी जोखिमदारी नहीं है।' 'आपको' ऐसा कहना है।

प्रश्नकर्ता : हमें कोई कुछ कहे, पागल कहे, बेअक्ल कहे, तो अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : ऐसा है न, आपको हँसना हो तो आटा नहीं फाँकना चाहिए और आटा फाँकना हो तो हँस नहीं सकते। दोनों में से एक रखो। आपको मोक्ष में जाना है, तो लोग पागल भी कहेंगे और मारेंगे भी सही, सभी कुछ करेंगे। लेकिन आपको अपनी बात छोड़ देनी पड़ेगी। इसलिए आप कह देना, 'भाई, मैं तो हारकर बैठा हूँ।' हमारे पास एक सज्जन आए थे। मैंने उनसे कहा कि, ''आपको हारकर जाना पड़ेगा। इसके बजाय मैं हारकर बैठ जाता हूँ। तू आराम से खाकर-ओढ़कर सो जा न! तुझे जिसकी ज़रूरत थी, वह तुझे मिल गया। 'दादा' को हराने की इच्छा है न? तो मैं खुद ही कबूल करता हूँ कि हम हार गए।''

अर्थात् इनकी बराबरी कैसे कर पाएँगे?

यह सारी तो माथापच्ची कहलाती है। इस देह को मार पड़े तो अच्छा, लेकिन यहाँ तो दिमाग़ को मार पड़ती है। वह तो बहुत परेशानी है!

जगत् की मिठास चाहिए और यह भी चाहिए, दोनों नहीं होगा। जगत् में तो अगर कोई हराने आएँ न, तो हारकर बैठना चाहिए चैन से। लोग तो उनकी भाषा में जवाब देंगे। 'बड़े शुद्धात्मा हो गए हो?' ऐसी सब गालियाँ भी देंगे क्योंकि लोगों का स्वभाव ही ऐसा है। खुद को मोक्ष में जाने का मार्ग नहीं मिला है इसलिए दूसरों को भी नहीं जाने देते, ऐसा है लोगों का स्वभाव। यह जगत् मोक्ष में जाने दे ऐसा है ही नहीं। इसलिए इन्हें समझा-बुझाकर, आखिर में हारकर भी कहना कि, 'हम तो हार चुके हैं।' तब वे आपको छोड़ देंगे।

ज्ञानी पुरुष की समझ से छुटकारा

पूरा देह, जन्म से मरण तक अनिवार्य है। उसमें से जो राग-द्वेष होते हैं, उतना ही हिसाब बंधता है। यह सब आप चलाते नहीं हैं, क्रोध-मान-माया-लोभ कषाय चलाते हैं। कषायों का ही राज है! 'खुद कौन है' उसका भान हो तब कषाय जाते हैं। अभी तो क्रोध-मान-माया-लोभ वगैरह सब दबे हुए हैं। अभी अगर ज़रा दबाव आए न तो वे भभक उठेंगे। क्रोध-मान-माया और लोभ निरंतर उसका खुद का ही चुराकर खाते हैं लेकिन लोगों को समझ में नहीं आता। इन चारों को यदि तीन साल भूखा रखो तो वे भाग जाएँगे। लेकिन जिस खुराक से वे जी रहे हैं, वह खुराक क्या है? यदि वह नहीं जानेंगे, तो वे कैसे भूखे मरेंगे? उसकी समझ नहीं होने की वजह से ही उन्हें खुराक मिलती रहती है। वे जीवित कैसे रहते हैं? और वह भी, अनादिकाल से जी रहे हैं! इसलिए उनकी खुराक बंद कर दो। ऐसा विचार तो किसी को भी नहीं आता और सभी ज़बरदस्ती उन्हें निकालने में लगे हैं। वे चारों यों ही चले जाएँ, ऐसे नहीं हैं। वे तो जब आत्मा बाहर निकलता है तब अंदर का सभी कुछ खत्म करने के बाद निकलता है। उन्हें हिंसक मार नहीं चाहिए, उन्हें तो अहिंसक मार चाहिए।

प्रश्नकर्ता : ये सारी खुराक कषाय ही खा जाते हैं, तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : वे तो खा जाएँगे। फिर भी 'दादाजी' की छत्रछाया है, कृपा से सब साफ (क्लियर) हो जाए, ऐसा है। खुद ही अगर इस सत्संग में से इधर-उधर हो गए तो तुरंत ही चिपट जाएगा सब। आपको तो 'दादाजी' का आसरा नहीं छोड़ना है, चरण नहीं छोड़ने हैं! 'ज्ञानी पुरुष' जो समझ देते हैं, उस समझ से छुटकारा होता है। समझ के बिना क्या हो सकता है? वीतराग धर्म ही सर्व दु:खों से मुक्ति देता है।

वीतरागता वहाँ चैतन्य सत्ता का अनुभव

वीतरागों का विज्ञान यानी क्या? कोई दु:ख ही न रहे। यदि वीतरागों का एक अक्षर समझ ले तो दु:ख रहे ही नहीं। लेकिन 'वीर' (भगवान महावीर) के एक भी शब्द को नहीं समझा।

वीतरागता कहाँ है? दोनों में ही, बखान करें या बदगोई करें फिर भी समदृष्टि रहे। हम 'नंगोड' (नग्गा) शब्द बोलते हैं, लेकिन भाव में समदृष्टि ही रहती है। यह बखान और बदगोई, आपको इन दोनों के साथ अनुकूल कर लेना पड़ेगा। फिर कोई आपको दोनों में से एक भी दे तो भी आपको वह छूएगा नहीं। बाहर यदि दोनों समान दिखेंगे तो अंदर भी दोनों समान दिखेंगे। सभी पाये समान तो दिखने ही चाहिए न? यदि पलंग के चारों पाये समान नहीं हों, तब उसे भी आधार देना पड़ता है न? जबकि ये दोनों तो एक ही माँ के बेटे हैं, तो फिर उनमें भी भेद क्यों?

इस द्वंद्व के कारण तो जगत् खड़ा है। बखानना और बदगोई करना, ये दोनों द्वंद्व ही हैं। दोनों द्वंद्वों से द्वंद्वातीत होना पड़ेगा, वीतराग होना पड़ेगा।

संसार की नींव राग-द्वेष की है और 'ज्ञान' की नींव वीतरागता की है! वीतराग यानी अभी कोई गाली दें, तो उसका असर खुद नहीं स्वीकार करते और स्वीकार करते तो नहीं है पर मूँह भी नहीं बिगड़ता, अंदर भाव भी नहीं बिगड़ते, परिणति नहीं बिगड़ती। खुद के परिणाम भी न बिगड़े, वे वीतराग! उन्हें गाली दें, मारपीट करे, घर जल जाए, तब भी उनके कुछ भी परिणाम नहीं बिगड़ते और वीतराग ही रहते हैं। वीतराग कौन हो सकता है? जिन्हें फायदा-नुकसान नहीं होता, जिन्हें सुख-दुःख नहीं होता, द्वंद्व नहीं होता, द्वंद्व से रहित हो चुके हो, वे वीतराग हैं। यह है वीतराग का अर्थ!

कोई आपकी जेब काटे, गालियाँ दें और राग-द्वेष नहीं हों तब आप जानना कि आपको चैतन्य सत्ता का अनुभव हो गया है। चैतन्य सत्ता का अनुभव हो गया हो, तभी इन सब में राग-द्वेष नहीं होते, निर्लेप ही रहते हैं। संसार समुद्र में होने के बावजूद भी निर्लेप रहते हैं।

भीतर अनंत शक्ति, तय करे वैसा हो जाए

प्रश्नकर्ता : कोई मेरा अपमान करे और मैं शांति से बैठा रहूँ, तो वह निर्बलता नहीं कहलाएगी?

दादाश्री : नहीं। ओहोहो! अपमान सहन करना, वह तो बहुत बड़ा बलवानपन कहलाता है!

अभी हमें कोई गालियाँ दें तो हमें कुछ भी नहीं होगा, उसके लिए मन भी नहीं बिगड़ेगा, वही है बलवानपन! और निर्बलता तो ये सब किच-किच करते ही रहते हैं न! जीवमात्र लड़ते ही रहते हैं। वह सारी निर्बलता कहलाती हैं। अर्थात् शांति से अपमान सहन करना बहुत बड़ा बलवानपन कहलाता है और ऐसा अपमान एक ही बार पार कर जाएँ, एक स्टेप पार कर जाएँ न, तो सौ स्टेप पार करने की शक्ति आ जाएगी। आपको समझ में आया न? सामने वाला यदि बलवान हो, तो जीवमात्र उसके सामने निर्बल तो हो ही जाता है। वह तो उसका स्वाभाविक गुण है। लेकिन यदि कोई निर्बल व्यक्ति आपको छेड़े और तब भी आप उसे कुछ भी नहीं करो, तब वह बलवानपन कहलाएगा।

मनुष्य खुद की शक्ति होने के बावजूद भी सामने वाले को सताए नहीं, अपने दुश्मन को भी परेशान न करे, वह बलवान कहलाता है।

एक बार अपमान हो जाए, तो अब अपमान सहन करने में कोई हर्ज नहीं है, लेकिन अपमान *लक्ष* (जागृति) में रखने की ज़रूरत है कि क्या यह जीवन अपमान के लिए है? अपमान का हर्ज नहीं है, मान की भी ज़रूरत नहीं है और अपमान की भी ज़रूरत नहीं है लेकिन क्या अपना जीवन अपमान के लिए है? ऐसा *लक्ष* तो होना चाहिए न?

जिस तरह मान के समय आनंद रहता है, उसी तरह अपमान के समय भी आनंद हाज़िर रहना ही चाहिए। अपमान के समय आनंद हाज़िर क्यों नहीं रहता? 'अपमान के समय आनंद हाज़िर रहेगा ही' ऐसा नहीं कहने से वह हाज़िर नहीं रहता, इसलिए अगर हम 'रहेगा ही' ऐसा कहेंगे तो रहेगा। लेकिन वह तो 'ध्यान नहीं रहता' ऐसा कहते हैं तो फिर वह ध्यान किस तरह हाज़िर रहेगा? भीतर आत्मा में अनंत शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। जैसा तय करे, वैसा हो जाए, ऐसा है।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

अडालज

4 मई (शनि) शाम 5 से 7 – **सत्संग** और **5 मई** (रवि) शाम 4 से 7-30 – **ज्ञानविधि**

22 से 26 मई (बुध से रवि) **(PMHT पेरेन्ट्स महात्मा) – सत्संग शिविर**

सूचना : यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी।

हिन्दी सत्संग शिविर – वर्ष 2024

5 से 9 जून – सत्संग और 8 जून – ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी।

सुरत

10-11 मई (शुक्र-शनि) शाम 8 से 11 – **सत्संग** और **12 मई** (रवि) शाम 7-30 से 11 – **ज्ञानविधि**

स्थल : SMC ग्राउन्ड, अंतरिक्ष लक्झरिया के पीछे, लक्ष्मीकांत आश्रम रोड़, कतारगाम, सुरत. **संपर्क :** 9574008007

बारडोली

15 (बुध) और **17** (शुक्र) **मई** शाम 7 से 10 – आप्तपुत्र **सत्संग** और **16 मई** (गुरु) शाम 6-30 से 10 – **ज्ञानविधि**

स्थल : धी पाटीदार जिन सायन्स कोलेज ग्राउन्ड, स्टेशन रोड़, बारडोली. **संपर्क :** 9426824028

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात 10 से 10-20 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और दोपहर 11-30 से 12 शनि-रवि
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (कन्नड़ा में)
- **'धर्म संदेश'** पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10 (गुजराती में)
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

भावनगर : त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव : ता. 16 से 19 फरवरी 2024

महुडी - विजापुर : SMHT यात्रा : ता. 24 फरवरी 2024

अप्रैल 2024
वर्ष-19 अंक-6
अखंड क्रमांक - 222

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

भावनगर त्रिमंदिर तीर्थक्षेत्र

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.